15/3/1963 शुक्रवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– तू प्यार का सागर है, तेरी एक बूँद के प्यासे हम.....

ओम् शान्ति। पहले ज्ञान का सागर है, पीछे प्रीत का सागर। आकर बच्चों को समझाते हैं। किन बच्चों को समझाते हैं? जो विषय सागर में गोता खाते रहते हैं। अब इस विषय सागर को वास्तव में कलहयुगी कालीदह भी कहते हैं। ये बातें भागवत में हैं ना। भागवत तो इस चालू समय (यानी) प्रेजेंट समय का शास्त्र है। कालीदह भी तो कलहयुग को कहेंगे ना। सो भी कालीदह में कौन रहते थे? तक्षक सर्प। तो एक सर्प थोड़े ही रहता होगा। नहीं, सर्प और सर्पिणी, उनका तो एक बड़ा गाँव होगा। सर्प और सर्पिणी तो सन्यासी भी कहते हैं। खुद को सर्प समझते हैं और स्त्री को सर्पिणी समझते हैं। तो कलहयुगी कालीदह में कौन रहते हैं? सर्प और सर्पिणियाँ। एक की तो बात ही नहीं है, अभी तो बेहद की बात है। अगर विषय सागर भी कहें, तो बरोबर ये है ही विषय सागर, जिससे हमको पार जाना है। विषय सागर को ही फिर पतित सागर भी कहेंगे; क्योंकि बहुत नाम है ना। तो ये सब बातें समझते हैं कि अपन तो अभी कलहयुग में नहीं हैं, अपन अभी संगमयुग पर हैं। कलहयुग से, कालीदह से हम किनारे में ले आए हैं। अभी हम न कलहयुग में हैं, न सतयुग में हैं। हम हैं ही संगमयुग में। कलहयुग या कालीदह का किनारा हमने छोड़ा हुआ है। हम जा रहे हैं। हाँ, इतना ज़रूर है (कि) किनकी दिल है कालीदह से, किनकी दिल कालीदह से उठ गई हैं। वो जैसे कि अपने स्वर्ग को ही याद करते हैं यानी ज्ञान-सागर को ही याद करना है; क्योंकि यहाँ से हमको पहले–2 ज्ञान-सागर के पास जाना है। पहले निर्वाणधाम में जाना है। वहाँ अपना ज्ञान-सागर रहते हैं ना, जो आकर सबको कालीदह से निकालते हैं। अभी कलहयुग के पीछे तो सतयुग है ना। विषय सागर के बाद है अमृत का सागर। तो बच्चे जानते हैं कि बरोबर यहाँ इसको विष्टा का सागर भी कहा जाता है, विख का सागर भी कहा जाता है, तो इनको विष्टा के कीड़े भी कहा जाता है। अच्छा दृष्टांत भी तो देते हैं कि बरोबर ब्राह्मणी, इसको भ्रमरी कहते हैं। सन्यासी भी दृष्टांत देते हैं ना कि विष्टा के कीड़े को भ्रमरी.....। अभी जनावरों की तो बात है नहीं, ये तो है मनुष्यों की बात। देखो, तुम भूँ-2 करती हो ना। प्रैक्टिकल में देखते रहते हो कि बहुत कीड़े को तुम ले आती हो, उनको बैठकर ज्ञान की भूँ-2 करती हो। पीछे कोई तो सड़ जाते हैं, कोई तो कुछ उठता है, पीछे भी सड़ जाते हैं, कोई के तो पर आ जाते हैं और उड़ने भी लग पड़ती हैं। तो जो छोटे हैं, सड़ जाते हैं, उनकी तो बात ही छोड़ दो। बाकी जो छोटियाँ हैं, उनको कलियाँ कहा जाता है, जिनको पर निकल जाते हैं उड़ने का, वो तो झट एक जगह में (यानी) ठिकाने में नहीं रहती हैं। ये उड़ीं और जा करके कीड़े को विष्टा से निकाल कर आप समान बनाने के लिए भूँ-2 करने लग पड़ेंगी। ब्राह्मणियों का धंधा ही... अभी ब्राह्मण नाम तो बिल्कुल सहज है; क्योंकि तुम अमृतसर में जाएँगे तो वहाँ गुरु पोटे और गुरु पोटियाँ बहुत कहते हैं। गुरु पोटे, सत्गुरु पोटे। अभी ये तो तुम जानते हैं कि प्रैक्टिकल में सत्गुरु पोटे और पोटियाँ तो तुम हो; क्योंकि बाबा ने समझाया था– यहाँ भारत में डाडे का हक ग्रैंड चिल्ड्रेन को बहुत लक मिलता है; क्योंकि डाडे की मिल्कियत है, बाबा की तो मिल्कियत है नहीं। देखो, 'ज्ञान का सागर' यह महिमा किसकी है? ये तो कालीदह में पड़ा हुआ था। वो कृष्ण कालीदह में जाकर पड़ा था ना। देखो, कालीदह कितना समय जलती है? वहाँ तो उनको लगाय दिया कि कालीदह में गया और सर्प ने डसा। यह तो तुम देखते हो कि अभी वो कृष्ण कालीदह में पड़ा हुआ है। ऐसा है ना! कृष्ण की आत्मा कालीदह (में) है ना। अभी भले कालीदह से निकल रहे हैं, तो सिर्फ एक कृष्ण तो नहीं होगा ना। यह जानते हो कि बाबा ने बहुत अच्छी तरह से समझाया है कि जो कालीदह में पड़े हुए हैं, जो काले हो गए हैं, साँवरे हो गए हैं, वो हैं ही देवी-देवताएँ। तो देखो, देवी-देवताओं को ही, जो कालीदह में पड़े हुए हैं, उन कीड़ों को पहले बैठ करके बाप आकर निकालते हैं। तुम जानते हो– हम कितने सनाथ थे यानी गोल्डन एज में थे और अब कैसे अनाथ हैं। भारत कितना सनाथ था! पर उनमें सनाथ भी कौन थे? राज्य कौन करते थे? जो राज्य करते थे वही अभी अनाथ हैं। 3 पैर पृथ्वी के उनको नहीं मिलते हैं, तो अनाथ हुए ना, सबसे अनाथ जैसे; क्योंकि सब कुछ जिन्होंने त्याग कर दिया है, शिवबाबा के ऊपर बलि चढ़ गए हैं, उसको अनाथ कहेंगे ना। ये अनाथ किसके ऊपर बलि चढ़े हैं? सनाथ के ऊपर, जो हम

अनाथ को बैठकर सनाथ बनाते हैं। अभी ऐसे तो नहीं है कि किसके पास 10/20 लाख हुए तो वो सनाथ हैं। नहीं, जिसके पास करोड़ है, पद्म है, वो सभी अनाथ हैं। सब अनाथ ही अनाथ हैं बिल्कुल ही। नाथ कहा जाता है परमपिता परमात्मा को। अपने नाथ को नहीं जानते हैं। देखो, कहा जाता है ना– आ करके कालीदह में इन्होंने नाग को नथन किया। तो बरोबर वो अनाथों को बैठ करके ज्ञान-अमृत पिलाकर सनाथ करते हैं यानी वो मंथन करते हैं ना। उनसे बैठकर निकालते हैं। ये सर्पों को अमृत पिलाय करके फिर देवता बनाय रहे हैं। तो इस समय ये सारी दुनिया कालीदह में पड़ी हुई है और उसमें भी पहले-2 कृष्ण का नाम रखते हैं। तो ज़रूर जो ऊँचे ते ऊँचा है उनका ही नाम देंगे। जब वो है कालीदह में, तो उनके पिछाड़ी वाले सभी हैं। अगर कृष्ण है तो ज़रूर कृष्ण के सभी कुल (भी हैं)। देखो, असुल तुम कृष्ण के कुल थे ना। अभी तुम जानते हो कि कालीदह में पड़े हुए थे, बाबा ने आकर अमृत का कलश देकर निकाला है। अच्छा, अमृत का कलश भी रखा है माताओं के ऊपर; क्योंकि माताओं को ही सर्पिणी कहा जाता है। कलश दिया ही है माताओं के ऊपर और माताएँ बैठ करके ये कुम्भीपाक नर्क से....। इसको नाम ही है बड़ा 'कुम्भीपाक नर्क', फिर इनको ही कालीदह भी कहते हैं। कालीदह भी कहो या कुम्भीपाक नर्क भी कहो, बात एक ही है और सब उनमें पड़े हुए हैं। जैसे कीड़ा होता है ना, बाहर निकालो तो कोई धरती पर थोड़े ही बैठेगा, ऐसे-2 करके फिर वो बिचारा गंद में चला जाएगा; क्योंकि उनको तो गंद में ही जाना पड़े। तो देखो, यहाँ भी तुम बच्चे बहुत देखेंगे, उनको कितना भी इस नर्क से निकालते हैं तो भी ऐसे कोई न कोई मेल या फीमेल बहुत हैं, वो फिर भी ऐसे-2 चल करके, फिर भी वो जा करके कालीदह में कूदती हैं अर्थात् नर्क में कूदती है और नर्क की कुण्ड उनको बड़ी याद पड़ती है। ये याद पड़ती है ना; इसलिए बाबा कहते हैं ना– नर्क के दरवाज़े को याद मत करो, उसको बन्द रखो। अभी सारी दुनिया है कलहयुग। ऐसे तो नहीं कहेंगे भारत है कलहयुग। नहीं, सारी दुनिया कालीदह में पड़ी हुई है, विष में गोता खाते रहते हैं और तुम देखो कितना आहिस्ते-2 निकाल करके, फिर उनको देती भी हो, स्वर्ग का द्वार भी दिखलाती हो अच्छी तरह से। जो नर्क का द्वार है वही स्वर्ग के द्वार दिखलाती हैं; इसलिए माताओं के ऊपर कलश रखा है। तो बहुत माताएँ भी हैं ब्रह्माकुमारियाँ। अभी ऐसे नहीं है कि कुमार नहीं हैं; परन्तु बहुत हैं, मैजॉरिटी है ना। तो मैजॉरिटी को पहले-2.....। तो जो कालीदह में बहुत कन्याएँ और ये वैश्याएँ पड़ी हुई हैं ना, अभी उनका ख्याल रखना चाहिए। आना चाहिए ना माताओं को। पहले-2 तरस उनके पास आना हुआ है। एक तरफ में माताएँ अमृत पिलाय रही हैं। देखो, तुम्हारे कितने सेन्टर्स हैं, सबको वो नर्क के द्वार से बचाते रहते हो और सबको कहते हो– नर्क के द्वार में न जाओ। ये सभी हैं संगमयुग की बातें, जबकि सृष्टि बदलने वाली होती है, जबकि ये वैश्यालय शिवालय (बनना होता है)। शिवालय नाम ही शिवबाबा का रखा हुआ है। सिर्फ मनुष्य भूल गए हैं। अगर स्वर्ग भी कहें, तो भी स्वर्ग का स्थापन करने वाला भी तो क्रियेटर है ना। क्रियेटर तो कहा ही जाएगा शिव को। ब्र०वि०शं० को तो कोई क्रियेटर कभी नहीं कहेंगे। श्रीकृष्ण को या ये मनुष्यों को तो कोई क्रियेटर नहीं कहे। मनुष्य को किसने पैदा किया? भगवान ने पैदा किया। भगवान तो एक ही है। ब्र०वि०शं० भी देवताएँ हैं। मीठी बच्चियाँ, नर्क के द्वार की तरफ देखना भी नहीं होता है। देखो, यहाँ कायदा कितना सख्त रखा हुआ है। हरेक बात अभी की है। जो भागवत है सो भी तो यहाँ इस समय का है। महाभारी महाभारत की लड़ाई भी सामने देखी हो। कुम्भीपाक नर्क भी कलहयुग को कहा जाता है, कालीदह कलहयुग को कहा जाता है। गोते भी सभी खाते रहते हैं। पैदा ही विख से होते हैं। स्वर्ग में विख तो होता नहीं है। तो इनको जो यह विख याद आती है ना, तो समझते हैं कि स्वर्ग में भी विख मिलती होगी। वो पूछते हैं कि क्या स्वर्ग में भी विख मिलेगी? ....निमंत्रण दिया है– भई चलो, वैकुण्ठ में, वहाँ विख नहीं मिलेगी। वहाँ तो विख की बात ही नहीं है; क्योंकि स्वर्ग माना ही स्वर्ग। विख तो कहा ही जाता है रावण को। तो ये 5 विकार रूपी रावण को तो कोई जानते ही नहीं हैं। ये कालीदह में ये नाग रहते हैं। इनको नाग कहा जाता है पाँच। देखो, नाटक में भी काले बनाते हैं ना। अशुद्ध अहंकार, फिर काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार; क्योंकि पहले-2 आता है अशुद्ध अहंकार। इसी संगमयुग की बात है। अभी तुम बच्चों के लिए सभी ज्ञान है, बाहर वालों

के लिए कोई ज्ञान नहीं है। अरे, वो तो कालीदह में पड़े हुए हैं। खूब अच्छी तरह से नर्क के गोते खाते रहते हैं। अगर सन्यासी हैं बरोबर, इसमें कोई शक नहीं है; परंतु पैदा तो फिर भी विख से होते हैं ना। तो ज़रूर पतित ठहरे ना। वो समझते हैं कि ये शरीर तो पतित है, विख से पैदा हुआ है, तो वो बिचारे जाते हैं उनको साफ करने के लिए। जब-2 कुछ बड़े दिन होते हैं तो गंगा में जाते हैं। कहते हैं– आत्मा तो निर्लेप है, बाकी ये शरीर बरोबर विख से पैदा हुआ है। अरे, विख से पैदा हुआ है (तो) गंगा स्नान से कोई शुद्ध थोड़े ही होंगे! ऐसी तो कोई बात हो नहीं सकती है। जबकि फिर भी प्रकृति तो तमोप्रधान है ना। शरीर तो फिर भी तुमको वहाँ से ही मिलेंगे, वो ही विख का बनाया हुआ, सो भी एकदम तमोप्रधान। तो बाप बैठकर कितना अच्छा समझाते हैं कि तुम सबको बोलो– ये कलहयुगी कालीदह है, इसमें सब बिच्छू-टिंडन पड़े हुए हैं। ये जो कुम्भीपाक नर्क (या) रौरव नर्क दिखलाते हैं ना। तो रौरव नर्क भी तो कोई चीज़ होगी ना! वो नदी तो नहीं बहती होगी, जिनमें जाकर ये पड़ेंगे। है कोई ऐसी नदी? तुमने देखा है यहाँ? कुछ भी नहीं है। ये तो यहाँ की बात देखने की है। ये तो पानी-2 है। इनमें थोड़े ही कोई मनुष्य जा करके, बैल और गधे (बनते हैं)। देखा है कभी कोई नदियों में या रौरव नर्क? रौरव नर्क तो कोई देखने (की चीज़ नहीं है)। यह कलहयुग ही एक रौरव नर्क है। ये कालीदह है। इसमें ये सब बिचारे दुखी हैं, बहुत तड़पते रहते हैं। बहुत दुःखी होते हैं; इसलिए वो जो हठयोगी सन्यासी हैं, वो सन्यास करते हैं। तो बाबा बैठकर समझाते हैं– वो तो हठयोग सन्यास है और ये है राजयोग सन्यास। अभी हम आया हूँ तुमको कालीदह से निकालने के लिए। कृष्ण को भी तो निकालना पड़े ना। ये बड़ी समझने की बात है कि बरोबर भारत अनाथ। देखो, कल एक माई आई थी ना। बोली– हम अनाथ आश्रम की सम्भालने वाली हैं। अभी देखो, अनाथ आश्रम तो कहा नहीं जाता है। जैसे गृहस्थ आश्रम ही कहा जाता है, पवित्र नहीं है तो भी। अभी ये अनाथ को आश्रम क्या कहेंगे! अनाथालय कहेंगे। सनाथालय, ये अनाथालय, ऐसे कहेंगे। अनाथ रहने वाले, सनाथ रहने वाले। अनाथ तो रहते हैं यहाँ। देखो, अभी भारत अनाथ है, सतयुग में सनाथ है। तो ये सभी बातें अच्छी तरह से बुद्धि में धारण करनी हैं और बरोबर समझना है कि दुनिया से हम निकले हुए हैं। हाँ बरोबर हम किनारे से निकले हुए हैं, जा रहे हैं; परंतु फिर भी पिछाड़ी में पीठ नहीं बढ़ानी होती है। ....अभी बाप आकर दोनों को ही सन्यास कराते हैं कि न तुम जाओ, न वो जावे और फिर रहना तो यहाँ ही है। तुम थोड़े ही पुरुषों को छोड़ कर बाहर में भागेंगी। पुरुष भी छोड़कर जावे, तो सब जंगल में ही जाकर बैठेंगे। फिर शहर में तो कोई बैठेगा नहीं। तब बोलते हैं कि नहीं, तुम दोनों अगर पवित्र हो जाओ तो हम तुम्हारे लिए नया शहर बनाएँगे। कौन-सा? जिसको फिर स्वर्ग कहा जाता है। तो दोनों के लिए कहते हैं कि बच्चे, दोनों पवित्र बनो। बस स्त्रियों ने बंद कर दिया तो पुरुष क्या कर सकते हैं? तो भूलो ना, दोनों सनाथ बनो और दरवाज़ा खोल दो। पुरुषों को भी (समझाया) जाता है, तुम भी स्त्री के द्वार में नहीं जाओ, नर्क द्वार में नहीं जाओ। बाबा देखो कितना समझाते रहते हैं। फिर भी लिख देते हैं– बाबा, हम भूल से नर्क में गिर गया। अरे मुट्ठे, नर्क में नहीं गिरो ना। नर्क में गिरेंगे तो जैसे उस कुम्भीपाक नर्क में या कालीदह में पड़ जाते हो। देखो, ये कालीदह कलहयुग है ना। कालीदह का नाम भी तो यहाँ रखेंगे ना। अभी ऐसे तो नहीं कि यहाँ कोई कृष्ण है, ये उनमें बैठेगा या डूबेगा। वो तो अभी जान गए हैं कि कहाँ की बात कहाँ की ! वण्डर खाते हैं इन सब बातों को। बाप कितना बैठ करके बच्चों को समझाते हैं। अभी बुद्धि में आता है! ये सारी दुनिया के मनुष्य कालीदह में हैं और बहुत दुःखी हैं। सभी निकलने के लिए चाहते तो हैं ना। तो बाप आकर इन सबको निकालते हैं, किनारे रख देते हैं। कालीदह के किनारे से निकल करके और अमृतदह। उसको ज्ञान अमृत कहा जाता है। कहते हैं कि वहाँ कैलाश पर्वत पर अमृत का सागर है। क्या कहते हैं उनको? (किसी ने कहा– अमृत मंथन में मानसरोवर) हाँ, मानसरोवर। तो मानसरोवर यानी मनुष्य को ज्ञान सरोवर कहा जाता है (क्योंकि) ज्ञान का मंथन करते हैं। तो कहाँ का नाम कहाँ जाकर रखा है ऊँचे पर्वतों में! शिव और पार्वती को भी पर्वत पर जाकर बैठाया है। तो शिव के भी मंदिर बहुत ऊँचे बनाते हैं। वास्तव में ये शंकर और पार्वती का, ये शिव-शंकर इकट्ठा कर देते हैं, नहीं तो शिव का मंदिर तो सबसे ऊँचा बनाना चाहिए। बड़ी-2 पहाड़ी पर बनाना चाहिए; क्योंकि वो है ऊँचे ते ऊँचा। रहने वाला भी ऊँचे ते ऊँचा। तो ये शायद हो सकता है, आगे शिव का मंदिर ऊँचा बनाते होंगे; परन्तु क्यों,

कौन जावे वहाँ, इतना ऊँचा है, इसलिए आजकल मंदिर शहरों में बनाय दिए हैं। नहीं तो है ऊँचे ते ऊँचा ना। जब शिव का मंदिर बनारस में है या घर-2 में है, पीछे पहाड़ों पर जाने की क्या दरकार है ; परन्तु अँधधुंध सरकार है। ये तो राज़ सब तुम बच्चों को समझाया जाता है। सो भी किनको धारणा होती है, किनको तो धारणा होती ही नहीं है। क्यों धारणा नहीं होती है? कुछ न कुछ तो खामियाँ हैं या तो कोई द्वारों को याद करते होंगे; क्योंकि मुख्य है यह दुश्मन सबका। तो हमारे पास बहुत बच्चे हैं जो बिचारे उस द्वार को बिल्कुल ही याद नहीं करते हैं, न किसको उस द्वार में ये घुटका डाल करके डालते हैं। भारत में बड़ी अच्छी-2 बातें हैं कि कन्या को कभी भी, जो पवित्र हैं ; क्योंकि गाई हुई हैं ना। अभी तुम लोग कन्याएँ हो ना। तुम तो द्वार नहीं खोलने वाली हो ना। तो देखो, कितनी गाई हुई हो– अधर कन्याएँ, कुँवारी कन्याएँ। क्यों? क्योंकि उनका फाटक बन्द है, नर्क का द्वार बन्द है। तुम लोग का नर्क का द्वार बन्द है ना। फिर पूजने लायक बनती हो, तुम्हारे मंदिर बनेंगे। अगर तुम्हारा दरवाज़ा खुल गया, तो फिर तुम मंदिर में लायक नहीं बनेंगी, फिर तो गोता खाएँगी और रसातल चली जाएँगी। बाप बैठकर समझाते तो बहुत हैं अच्छी तरह से और कभी-2 दिल भी होती है (कि) यह डान्स जा करके दिल्ली और बॉम्बे में करें। बाबा को बहुत होता है ; क्योंकि यहाँ डान्स के शौकीन कोई एकर-बेकर हैं और वहाँ तो हज़ारों आ जाती है। बहुत आ जाते हैं ढेर के ढेर। उनमें बहुत ऐसे हैं। यहाँ तो है ही मधुबन। यहाँ तो कोई विकार की बात ही नहीं है। भले मन्सा (में) बहुतों को आता होगा ; परन्तु कर्म-इन्द्रियों में तो नहीं जाना पड़े ना। कोई द्वार में जाना तो नहीं है ना। द्वार में गया बेड़ी डूबी। देखो, बातें कितनी कड़ी हैं अभी। ब्रह्मा बाबा सभा में सुनाय सकते हैं, ऐसे मत समझो, बाबा यही मुरली वहाँ बड़ी-2 सभा में भी चलाते थे। देखो, जब मुरली चलाता हूँ, तो हमको दिल्ली और बॉम्बे याद पड़ती है। चलो, उधर बड़ी-2 सभा है, वहाँ बैठकर ठोकूँगा अच्छी तरह से कि भाई, ये कालीदह में मत कूदो अभी। कालीदह भी बड़ी कड़ी है। इसको बिल्कुल कुम्भीपाक नर्क कहा जाता है। देखो तो क्या दुर्दशा हो गई है भारत की! कोई किसको पता थोड़े ही पड़ता है। कोई भी विद्वान, आचार्य, पंडित, इतने सन्यासी हैं, उनको यह थोड़े ही मालूम पड़ता है कि भारत गिरा हुआ है, चट खाते में है। नहीं, वो अपना गुलछर्रे उड़ाते रहते हैं, पैसा मिलता है, महल बनाकर बैठे हैं। श्री-श्री 108 जगद्गुरु का नाम, इनका कोई हिसाब-किताब पूछने वाला नहीं है। बच्चों को कितना दफा बाप बैठकर डायरैक्शन देते हैं; परन्तु समझते हैं बच्चे अभी सगीर हैं, अभी छोटे हैं, इतनी ज्ञान की ताकत नहीं है ; इसलिए उछलते नहीं हैं, नहीं तो उनको तो भारत पर नज़र जाना चाहिए कि यह जो श्री-श्री 108 जगद्गुरु का टाइटिल बैठ करके ये हिरण्यकश्यप, हिरणाकश(हिरण्याक्ष) वाले अपने सिर पर रखे हैं, ये कहाँ की बात है? ये तो डिफेम है। भारत के पूज्य, जो सबका बाप है, उनका टाइटिल ये विख से पैदा होने वाले, कालीदह में पड़े हुए, पतित कहो तो भी कालीदह कहो ना ; पर वो अपने ऊपर रख बैठे हैं; परन्तु अभी तलक बच्चे सगीर हैं। कोई भी बच्चा अभी बालक नहीं बना हुआ है। ऐसे मत कोई समझे, भले बाबा कानपुर में जाते हैं या बॉम्बे में जाते हैं, तो ऐसे मत समझो। वो तो अभी माताओं को यह चैलेंज (दे रहे हैं)। यह तो शिवबाबा बैठकर कहते हैं कि माताओं को, माताओं में अभी ताकत नहीं है इतना बैठकर जोर से, वो ताकत चाहिए निर्भयतापणे की एकदम। निर्भय भी आने की तो ताकत, निर्भय आनी माताओं को तो और ही जास्ती। पुरुष तो निर्भय बन जाते हैं ना, लड़ाई के मैदान में घुस जाते हैं। वो निर्भय होते हैं, जगल में, यहाँ-वहाँ, कहाँ भी जाओ। माताएँ नहीं जावें। उनका चोला ही ऐसे है। तो वो इतनी निर्भय हो, ललकार करें। ये भी समय चाहिए जब तलक बालक न बने हैं, इतनी ललकार कैसे कर सकती हैं बिचारियाँ! बिचारियाँ कहेंगे ना अभी तलक। जब तलक ये आवे। अच्छा, और क्या समझावें बच्चों को ? कितना समझाते रहते हैं कि बच्चे, जाकर ये कीड़ों को बाहर निकालो, फिर उनको भूँ-2 करो। भूँ-2 तो ज़रूर चाहिए ना। भ्रमरी भूँ-2 नहीं करती होगी ! ज्ञान की भ्रमरी का भूँ-2 है ना। जब तलक भूँ-2 न करे, वर्थ नॉट ए पेनी, ऐसे कहेंगे ना। अरे क्यों? देखो, मम्मा वर्थ पाउण्ड बनती है, अगर उनके हमजिन्स जाकर वर्थ पेनी बनें, दास-दासियाँ बनें, कितनी वण्डर की बात है और मम्मा जानती भी है कि बरोबर ये जाकर वर्थ पेनी बनेगी यानी जो भ्रमरी है, भूँ-2 करती है, जो न भूँ-2 करती है, उनके आगे भरी ढोएंगी। अच्छा ... क्या सुनती हो मुट्ठी?
अच्छा, बापदादा का, मीठी मम्मा का, मीठे-2 सिकीलधे बच्चों को गुडमॉर्निंग। ✶✶✶✶